



पूसा समाचार



खंड 32, अंक 1

जनवरी-मार्च, 2016

राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी 'कृषि उन्नति मेला - 2016'

भाकृअनुप - भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के परिसर में कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संयुक्त सहयोग से दिनांक 19 से 21 मार्च, 2016 तक राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी 'कृषि उन्नति मेला - 2016' का आयोजन हुआ। इस मेले में भाकृअनुप के विभिन्न संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, विकास एजेन्सियों, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की अग्रणी कम्पनियों और स्वैच्छिक संगठनों ने अपनी भागीदारी करते हुए अपनी प्रौद्योगिकियों और उत्पादों को प्रदर्शित किया। देश के विभिन्न भागों से आए एक लाख से भी अधिक आगन्तुकों और सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के 500 से भी अधिक प्रदर्शकों ने इस मेले में भाग लिया और इसका लाभ उठाया।

मेले की मुख्य विशेषताओं में कृषि, बागवानी, पशु पालन, डेरी एवं मात्स्यिकी की उन्नत प्रौद्योगिकियों, फार्म मशीनरी तथा उपकरणों की प्रदर्शनी के साथ-साथ फसल किस्मों और रीतियों का जीवंत प्रदर्शन भी शामिल था। अधिक पैदावार वाली किस्मों के बीजों और पौधों की बिक्री भी मेले का एक अन्य आकर्षण थी। इस मेले का आयोजन प्रतिष्ठित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली के मेला मैदान में किया गया था।

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 19 मार्च, 2016 को कृषि उन्नति मेले का उद्घाटन किया।

अपने संबोधन में माननीय प्रधान मंत्री ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था जो कि काफी हद तक कृषि की प्रगति पर निर्भर करती है, में सुधार लाने और उसे आगे बढ़ाने में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। माननीय प्रधान मंत्री ने राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी जो कि किसानों तक नई तकनीकों और नवोन्मेषों का सीधा प्रदर्शन करने की एक प्रभावी आउटरीच क्रियाविधि है, का आयोजन करने की पहल की सराहना की। माननीय प्रधान मंत्री ने किसानों को विविधीकृत कृषि को अपनाने की सलाह दी जैसे कि अनाज, फलों, सब्जियों, आदि की नियमित खेती करना; खेतों के किनारे लकड़ी के लिए वृक्षों का रोपण करना; तथा पशु पालन को अपनाना जिसमें डेरी, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन (पोल्ट्री) और साथ ही लाभप्रद मधुमक्खी पालन को शामिल किया जाए। इन्होंने खेती-बाड़ी से लाभप्रदता

और आय को बढ़ाने के लिए जैविक खेती और मूल्य वर्धन को अपनाने का भी सुझाव दिया। किसानों के लिए प्रभावी बाजार सम्पर्क की जरूरत पर बल देते हुए उन्होंने सरकार की ई-बाजार पहल के बारे में बताया। माननीय प्रधान मंत्री ने सरकार द्वारा हाल ही में किसानों के कल्याण के लिए प्रारंभ की गई कुछ नवीन पहलों जैसे कि मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना; प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना; प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना के बारे में भी विस्तार से बताया और किसानों से इन योजनाओं का भरपूर लाभ उठाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री ने वर्ष 2014-15 के लिए उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले राज्यों और प्रगतिशील किसानों को कृषि कर्मण पुरस्कार भी प्रदान किए। संबंधित राज्यों की ओर से उनके मुख्य मंत्रियों और कृषि मंत्रियों ने पुरस्कार ग्रहण



भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से कृषि कर्मण पुरस्कार ग्रहण करती हुई एक कृषिरत महिला

किए। माननीय प्रधान मंत्री ने विभिन्न किसानोपयोगी सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए किसान सुविधा नाम से एक मोबाइल ऐप की भी शुरुआत की। माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डाला और साथ ही किसानों के कल्याण हेतु माननीय प्रधान मंत्री की गहन रूचि, समर्पण और भागीदारी के लिए उनकी प्रशंसा की। माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री डॉ. संजीव कुमार बालियान ने स्वागत भाषण दिया तथा माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कुंडरिया ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। छत्तीसगढ़, हरियाणा, राजस्थान तथा मेघालय के माननीय मुख्य मंत्री तथा मध्य प्रदेश के माननीय कृषि मंत्री; कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग के सचिव तथा अन्य गणमान्य अतिथि भी मंच पर उपस्थित थे।

तीन दिवसीय मेले के दौरान, प्रमुख विषयों पर कुल नौ तकनीकी सत्र आयोजित किए गए यथा प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना; प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना; एकीकृत कृषि प्रणाली (बागवानी एवं मात्स्यिकी); कृषि विपणन; एकीकृत कृषि प्रणाली (फसल-पशुधन); प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन; मृदा स्वास्थ्य में सुधार लाना; और प्रत्येक विषयी क्षेत्र से जुड़ी सरकारी योजनाएं। किसानों-वैज्ञानिकों-नव प्रवर्तक किसानों के बीच आपसी विचार-विमर्श भी एक प्रमुख आकर्षण था जिसमें मेले में आने वाले किसानों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

मेले के समापन पर, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने समापन संबोधन प्रस्तुत किया और साथ ही पूसाकृषि नाम से एक मोबाइल ऐप की भी शुरुआत की। इस अवसर पर बोलते हुए माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि 'यह ऐप माननीय प्रधान मंत्री के आह्वान प्रयोगशाला से खेत तक प्रौद्योगिकियों को ले जाने' की दिशा में कार्य करेगा। इस ऐप की मदद से किसानों को फसलों की नई किस्मों,

फसलों की खेती में संसाधनों का संरक्षण करने वाली रीतियों के साथ-साथ फार्म मशीनरी और उपकरणों की जानकारी मिलेगी और इससे किसानों की आय को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

समापन समारोह में उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों में शामिल थे : श्री मोहनभाई कुंडरिया एवं डॉ. संजीव कुमार बालियान माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री; डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद; श्री शोभना के. पट्टनायक, सचिव, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग; श्री अशोक कुमार अंगुराना, सचिव, पशु पालन, डेयरी एवं मात्स्यिकी विभाग; श्री चन्द्रजित बनर्जी, महानिदेशक, सीआईआई; श्री राघवेंद्र सिंह, अपर सचिव, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग; श्री नरेन्द्र भूषण, संयुक्त सचिव, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग; एवं डॉ. रविन्द्र कौर, निदेशक (कार्यकारी), भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान। कृषि नवोन्मेष, प्रौद्योगिकी विकास और भा.कृ.अ.सं. के साथ मिलकर प्रौद्योगिकियों का प्रसार करने में उल्लेखनीय योगदान करने के लिए पांच (05) किसानों को 'आईएआरआई फेलो पुरस्कार' तथा उनतालिस (39)

किसानों को 'नवोन्मेषी किसान पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

भा.कृ.अ.सं. का 54वां दीक्षांत समारोह

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के स्नातकोत्तर विद्यालय का 54वां दीक्षांत समारोह दिनांक 5 फरवरी, 2016 को मनाया गया। दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने दीक्षांत सम्बोधन दिया और छात्रों व संकाय सदस्यों को पदक एवं पुरस्कार प्रदान किए। माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद; डॉ. वी.एल. चोपड़ा, पूर्व सदस्य, योजना आयोग, भारत सरकार; तथा डॉ. आर.एस. परोदा, अध्यक्ष, ट्रस्ट फॉर एडवांसमेंट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज (तास) एवं पूर्व महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

अपने सम्बोधन में माननीय राष्ट्रपति महोदय ने इस बात पर बल दिया कि कृषि के वैश्वीकरण से प्रसंस्कृत खाद्य जिनसों की



माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह से नवोन्मेषी किसान पुरस्कार प्राप्त करता हुआ एक किसान



भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी 54वां दीक्षांत संबोधन देते हुए

संभावनाएं कई गुणा बढ़ी हैं। हमारे किसानों और कृषि उद्यमियों को इस अवसर का भरपूर लाभ उठाना चाहिए। कृषि प्रौद्योगिकी विभाग, ग्रामीण कृषि बुनियादी सुविधा, ऑन-फार्म प्रसंस्करण तथा मूल्य वर्धन, एवं भंडारण सुविधाओं के लिए निवेश में वृद्धि करना जरूरी हो गया है। ग्रामीण कृषि व्यवसाय के विकास में बाधा उत्पन्न करने वाले मुद्दों का समाधान करने की जरूरत है। ग्रामीण क्षेत्र में अभी हाल ही में प्रारंभ "स्टार्ट-अप इंडिया" के प्रसार से कृषि आधारित उद्यमों को स्थापित करने में मदद मिल सकेगी। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के मेरा गांव – मेरा गौरव कार्यक्रम जिसके अंतर्गत प्रत्येक वैज्ञानिक द्वारा किसी गांव को अंगीकृत किया जाएगा, का उद्देश्य आजीविका निर्वाह कृषि का रूपांतरण व्यावसायिक कृषि के रूप में करना होना चाहिए।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने वर्ष 2015 के दौरान संस्थान की उल्लेखनीय अनुसंधान उपलब्धियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की 15 किस्में जारी कीं।

दीक्षांत समारोह के दौरान कुल 242 छात्र-छात्राओं (120 एम.एससी., 07 एम.

टेक. एवं 115 पीएच.डी.) जिनमें विदेशी छात्र भी शामिल थे, को उपाधियां प्रदान की गईं। फसलोत्तर प्रौद्योगिकी की सुश्री सुप्रिया प्रियदर्शिनी और सूक्ष्म जीवविज्ञान की सुश्री सरिता एम. को क्रमशः एम.टेक और पीएच.डी. के लिए वर्ष के सर्वश्रेष्ठ छात्र का पुरस्कार प्रदान किया गया। एम. एससी. तथा पीएच.डी. दोनों के पांच-पांच छात्रों को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान प्रतिभा पदक दिये गए। संस्थान के पांच संकाय सदस्यों नामतः डॉ. डी.आर. विश्वास (मृदाविज्ञान एवं कृषि रसायनविज्ञान); डॉ. मान सिंह (जलविज्ञान

एवं प्रौद्योगिकी); डॉ. ए. तालुकदार (आनुवंशिकी); डॉ. वी.के. सहगल (कृषि भौतिकी); तथा डॉ. दिनेश कुमार (सस्यविज्ञान) ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों के लिए सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार-2015 प्राप्त किए। डॉ. जी.पी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, आनुवंशिकी संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान को "गेहूं प्रजनन व आनुवंशिकी" पर उनके उत्कृष्ट अनुसंधान योगदान के लिए 16वां डॉ. बी. पी. पाल पदक प्रदान किया गया। डॉ. तीर्थ कुमार दत्ता, प्रधान वैज्ञानिक, पशु जैव-प्रौद्योगिकी केन्द्र, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल ने "पशु जैव-प्रौद्योगिकी" के क्षेत्र में उल्लेखनीय अनुसंधान योगदान के लिए 16वां हरि कृष्ण शास्त्री स्मारक पुरस्कार प्राप्त किया। डॉ. आर. अशोकन, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलुरु को "नाशीजीव प्रबंधन के लिए अग्रणी आणविक तकनीकों का विकास" में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए द्विवार्षिकी 2013-14 के लिए 24वां सुकुमार बसु स्मारक पुरस्कार प्रदान किया गया।

46वां लाल बहादुर शास्त्री स्मारक व्याख्यान

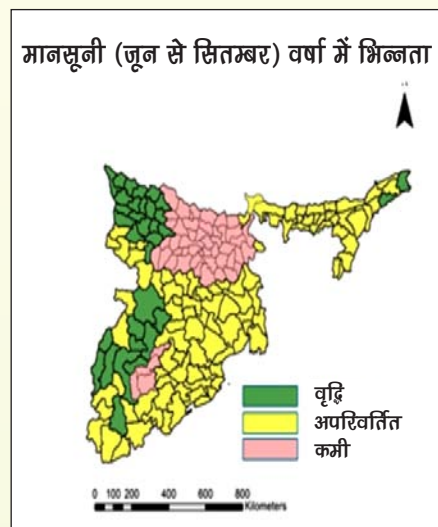
डॉ. सौम्या स्वामीनाथन, महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई



भारत के माननीय राष्ट्रपति संस्थान के 54वें दीक्षांत समारोह में डॉ. आर. अशोकन, प्रधान वैज्ञानिक, आईआईएचआर, बंगलुरु को 24वां सुकुमार बसु स्मारक पुरस्कार प्रदान करते हुए



डॉ. सौम्या स्वामीनाथन, महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली 46वां लाल बहादुर शास्त्री स्मारक व्याख्यान देते हुए



समाश्रयण के साथ-साथ मैन केन्डाल (Mann Kendall) परीक्षण का उपयोग करते हुए विशिष्टता परीक्षण किया गया। पूर्वी भारत के सात विभिन्न राज्यों में से, बिहार के सभी जिलों और छत्तीसगढ़ के पांच जिलों में वर्षा में कमी होने का रुझान प्रदर्शित हो रहा है जबकि पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के कुछ जिलों में वर्षा में वृद्धि होने के संकेत मिल रहे हैं वहीं अन्य जिलों में मानसूनी वर्षा पैटर्न में कोई बदलाव नहीं देखा जा रहा है। मानसूनी वर्षा में कमी आने से वर्षा की कमी वाले राज्यों विशेषकर बिहार में खरीफ फसल उत्पादन प्रभावित हो सकता है। इन राज्यों के लिए समुचित फसल प्रबंधन योजना का होना अनिवार्य है।

दिल्ली ने दिनांक 4 फरवरी, 2016 को "भारत के लिए पोषण एवं स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ और उनके संभावित समाधान" विषय पर 46वां लाल बहादुर शास्त्री स्मारक व्याख्यान दिया। डॉ. आर.एस. परोदा, अध्यक्ष, तास एवं पूर्व महानिदेशक, भाकृअनुप ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।



डुरुम गेहूं जीनप्ररूपों : एचआई 8713 (बायें) तथा पीडीडब्ल्यू 233 (दायें) में पत्तियों में पीलापन तथा टूट के लक्षण

16Sr XI समूह के फाइटोप्लाज्मा स्ट्रेन की पहचान की गई।

अनुसंधान

भारत में सुगरकेन ग्रासी भाटू (SCGS) फाइटोप्लाज्मा के नए प्राकृतिक वेक्टर

संचरण आमाप में रोगग्रस्त पौधों से गन्ने के स्वस्थ पौधों में एससीजीएस फाइटोप्लाज्मा का संचरण करने में मैजीज पोर्टिको (MP) (मेलिकर) तथा कोफैना यूनिमैकुलैटा (CU) (सिग्नॉर्ड) नए प्राकृतिक एवं क्षमताशील वाहक अथवा वेक्टर सिद्ध हुए हैं।

गेहूं में फाइटोप्लाज्मा रोग की नई रिपोर्ट

इन्दौर में डुरुम तथा चपाती गेहूं जीनप्ररूपों दोनों को संक्रमित करने वाले एक नए गेहूं टूट तथा स्ट्रीक रोग के साथ

पूर्वी भारत में दीर्घावधि वर्षा विश्लेषण

रुझान विश्लेषण के लिए पूर्वी भारत के जिलावार दीर्घावधि वर्षा आंकड़ों (100 वर्ष) का विश्लेषण किया गया। रैखिक

प्रति-ऑक्सीकारकों की दैनिक जरूरत के लिए ऐन्थोसायनिन

ऐन्थोसायनिन को उच्च प्रति-ऑक्सीकारण सक्रियता के लिए जाना जाता था। ऐन्थोसायनिन से भरपूर पाउडर का खाद्य ग्रेड वाले विलायक के साथ निष्कर्षण किया गया और ऐन्थोसायनिन से समृद्ध पाउडर प्राप्त करने के लिए इसे परिशुद्ध किया गया। प्रति-ऑक्सीकारक पाउडर प्राप्त करने के लिए खाद्य ग्रेड मैट्रिक्स में इसका पुनः संपुटीकरण किया गया अथवा उसे टिकिया या कैप्सूल का रूप दिया गया जिसका इस्तेमाल दिन प्रतिदिन के उपभोग हेतु किया जा सकता



है। ऐन्थोसायनिन के निष्कर्षण के लिए उपयोग किए गए स्रोत थे : गाजर (पूसा असिता), बैंगनी बंदगोभी, काला चावल, गुलाब, चाइना गुलाब, आदि। डीपीपीएच आमप से पता चला कि इन ऐन्थोसायनिन की ED₅₀ मात्रा टीबीएचक्यू (कृत्रिम प्रति-ऑक्सीकारक मानक) की 123.2 µg ml⁻¹ की तुलना में 159.3–384.3 µg ml⁻¹ के बीच थी।

संस्थान अनुसंधान परिषद (IRC-II) की बैठकें

विभिन्न विद्यालयों यथा फसल सुधार, बागवानी विज्ञान, समाज विज्ञान, प्राकृतिक संसाधन प्रबंध, फसल संरक्षण व आधारभूत विज्ञान की संस्थान अनुसंधान परिषद (IRC-II) की बैठकों का आयोजन निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की अध्यक्षता में दिनांक 10 फरवरी से 4 मार्च, 2016 तक किया गया।

पूसा परिसर के भूदृश्य निर्माण पर परामर्शी समूह की बैठक

भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा संस्थान के बोर्ड कक्ष में दिनांक 12–13 जनवरी, 2016 को पूसा परिसर, नई दिल्ली के भूदृश्य निर्माण पर परामर्शी समूह की बैठक का आयोजन किया गया। परामर्शी समूह की बैठक के सत्रों की अध्यक्षता डॉ. त्रिलोचन महापात्र, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने की। बैठक में प्रस्तुत किए गए मुद्दों पर चर्चा की गई। विशेषज्ञों ने परिसर का दौरा करके परिसर में भूदृश्य निर्माण की वर्तमान और भावी संभावना पर अपने सुझाव दिए। कार्यक्रम के समापन पर डॉ. एस. एस. सिन्धु, प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, पुष्पविज्ञान एवं भूदृश्य निर्माण संभाग ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रसार गतिविधियां

पूसा सब्जी विज्ञान मेला – 2016

संस्थान के शाकीय विज्ञान संभाग ने अपने अनुसंधान व प्रदर्शन फार्म पर अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए दिनांक 20 जनवरी, 2016 को पूसा सब्जी विज्ञान मेले का आयोजन किया। मेले का उद्घाटन संस्थान के तत्कालीन निदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने डॉ. के.वी. प्रभु, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) तथा डॉ. जे. पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार), भा.कृ. अ.सं. की उपस्थिति में किया। संभाग द्वारा विकसित व्यापक श्रेणी की किस्मों/संकरों, विदेशी सब्जियों तथा उत्पादन प्रणालियों सहित अनेक प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन सब्जी प्रदर्शन इकाई में किया गया ताकि किसान और शौकिया बागवान प्रौद्योगिकियों की क्षमता को स्वयं देख सकें। स्वास्थ्य एवं पोषणिक लाभों के साथ-साथ कम अवधि में कहीं अधिक आमदनी और लाभ के साधन के रूप में संभाग की किस्मों/संकरों के विभिन्न ताजा सब्जी उत्पादों और इनके बारे में वैज्ञानिक जानकारी की प्रदर्शनी भी लगाई गई। मेले में दिल्ली तथा पड़ोसी राज्यों यथा उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड से बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लिया जो कि अभी तक की सर्वाधिक प्रतिभागिता संख्या थी (लगभग 700)। मेले के अन्य आकर्षण सब्जियों के बीजों, जैव उर्वरकों, तथा फसलोत्तर उत्पादों के बिक्री पटल



संस्थान अनुसंधान परिषद (IRC-II) की बैठक



संस्थान में आयोजित पूसा सब्जी विज्ञान मेला

थे। मेले में आने वाले किसानों और शौकिया बागवानों को आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकियों संबंधी साहित्य उपलब्ध कराया गया।

‘मेरा गांव—मेरा गौरव’ कार्यक्रम की शुरुआत

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, कलिम्पोंग द्वारा दिनांक 28 जनवरी, 2016, 29 जनवरी, 2016, 1 फरवरी, 2016 एवं 2 फरवरी, 2016 को क्रमशः लोवर इच्छे, लोवर दलापचंड,

बड़ा मांगवा और लोवर बोंग बस्ती में ‘मेरा गांव – मेरा गौरव’ कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। डॉ. सुजित सरकार, वैज्ञानिक प्रभारी ने वैज्ञानिकों तथा किसान समुदाय के बीच आपसी सामंजस्य बनाने और किसानों की समस्याओं का समाधान करने में ‘मेरा गांव – मेरा गौरव’ योजना की भूमिका के बारे में बताया। डॉ. नताशा गुरुंग ने वैज्ञानिक-किसान इन्टरफेस की महत्ता पर बल दिया। इस अवसर पर गांव के किसानों में टमाटर की पूसा रोहिणी किस्म की पौद वितरित की गई।



मेरा गांव – मेरा गौरव कार्यक्रम के दौरान टमाटर की किस्म पूसा रोहिणी की पौद का वितरण

प्रक्षेत्र दिवस

❖ संस्थान के कृषि विज्ञान केन्द्र, शिकोहपुर में विभिन्न विषयों पर तीन प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किये गए : i) ‘गाजर एवं सरसों’ पर दिनांक 20 जनवरी, 2016 एवं 10 फरवरी, 2016 को क्रमशः चान्दू तथा हसनपुर गांव में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिनमें क्रमशः 29 व 31 किसानों ने भाग लिया; ii) ‘फूलगोभी में डायमण्ड बैकमॉथ प्रबंध’ पर दिनांक भोडकलां गांव में दिनांक 12 फरवरी, 2016 को प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिसमें 48 किसानों ने भाग लिया; और iii) ‘चना’ पर लांगरा, टीकली तथा भोडकलां गांव में क्रमशः दिनांक 8, 11 व 15 मार्च, 2016 को प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिनमें क्रमशः 78, 68 एवं 65 किसानों व कृषिरत महिलाओं ने भाग लिया।

❖ संस्थान द्वारा दिनांक 24 फरवरी, 2016 को निजी बीज कम्पनियों के लिए गाजर पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिसमें 26 निजी बीज कम्पनियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कुल मिलाकर, सामान्य मौसम की गाजर की 48 संकर किस्मों को प्रदर्शित किया गया जिनमें 31 किस्में लाल रंग की, 11 किस्में बैंगनी/काले रंग की, 4 नारंगी रंग की और 2 नारंगी-लाल रंग की थीं। प्रतिभागियों को आशाजनक एवं बहु पोषक तत्वों से समृद्ध गाजर की संकर किस्मों के साथ-साथ उनकी भावी संभावनाओं के बारे में जानकारी दी गई। डॉ. पंजाब सिंह, पूर्व सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नेतृत्व में पंचवर्षीय समीक्षा दल ने गाजर के खेतों का दौरा किया और बहु पोषक तत्वों से समृद्ध गाजर संकर किस्मों की भावी संभावनाओं का पता लगाने के लिए वैज्ञानिकों के साथ विचार विमर्श किया।

❖ संस्थान की आंचलिक प्रौद्योगिकी प्रबंध व व्यवसाय नियोजन एवं विकास (जैडटीएम एवं बीपीडी) इकाई द्वारा आनुवंशिकी संभाग की प्रक्षेत्र संख्या 2 सी में दिनांक 26 फरवरी, 2016 को सरसों प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ‘त्रैसिका सुधार कार्यक्रम’ का प्रदर्शन करना था।



पूसा बागवानी प्रदर्शनी – 2016

पूसा बागवानी प्रदर्शनी – 2016

संस्थान ने बागवानी में रूचि रखने वालों, उत्पादकों, शौकीनों तथा छात्रों आदि में जागरूकता का सृजन करने के उद्देश्य से दिनांक 27-29 फरवरी, 2016 को आनुवंशिकी संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के लॉन में पूसा बागवानी प्रदर्शनी-2016 को आयोजित किया। प्रदर्शनी में भाग लेने वाले विभिन्न सार्वजनिक एवं निजी संगठनों, उत्पादकों, शौकिया बागवानों ने अपने उत्पादों को प्रदर्शित किया। पूसा बागवानी प्रदर्शनी-2016 का उद्घाटन डॉ.

त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप, नई दिल्ली ने किया। इस अवसर पर दिल्ली तथा अन्य राज्यों के आगन्तुक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

सरसों की किस्म पूसा 30 पर किसान-वैज्ञानिक इन्टरफेस बैठक

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा दिनांक 27 फरवरी, 2016 को बागपत (उत्तर प्रदेश) के लेहचौरा गांव में सरसों की किस्म पूसा 30 पर प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर,



सरसों की किस्म पूसा 30 की विशेषताओं के बारे में किसानों के साथ बातचीत करते हुए वैज्ञानिक

किसानों व वैज्ञानिकों के बीच एक इन्टरफेस बैठक भी आयोजित की गई जिसमें संस्थान के कृषि प्रसार संभाग तथा कृषि अर्थशास्त्र संभाग के वैज्ञानिकों ने पोषण का महत्व बताते हुए इसे हासिल करने के तरीके बताये। डॉ. डी. के. यादव ने सरसों की किस्म पूसा 30 की विशेषताओं के बारे में बताते हुए जानकारी दी कि स्वास्थ्य की दृष्टि से इस किस्म में इरुसिक अम्ल की मात्रा कम है। इन्होंने सरसों की खेती करने वाले किसानों को पूसा 30 के लिए बाजार सम्पर्क विकसित करने के प्रति भी प्रोत्साहित किया।

शहद दिवस

कंकरोला गांव में दिनांक 10 फरवरी, 2016 को शहद दिवस मनाया गया जिसमें किसानों को मधुमक्खी पालन अपनाने की सलाह दी गई ताकि वे स्व: रोजगार कर सकें। प्रतिभागियों को परागण के माध्यम से फसल उत्पादन बढ़ाने में मधुमक्खी पालन का महत्व भी बताया गया।

क्षमता निर्माण

प्रशिक्षण

❖ संस्थान के कृषि विज्ञान केन्द्र, शिकोहपुर में चार व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाये गए जो कि इस प्रकार हैं : i) दिनांक 18 से 23 जनवरी, 2016 को अपने परिसर में "मौसमी फलों व सब्जियों का परिरक्षण" (कुम्भावास गांव की 15 ग्रामीण महिलाओं ने भाग लिया); ii) दिनांक 18-27 जनवरी, 2016 को अपने परिसर में "पादप संरक्षण, जैव नाशकजीवनाशी उत्पादन एवं नाशीजीव नियंत्रण" (16 ग्रामीण युवकों ने भाग लिया); iii) दिनांक 18 से 28 जनवरी, 2016 को "डेयरी पालन" (गुडगांव व रिवाड़ी जिलों के विभिन्न गांवों से कुल 40 ग्रामीण युवाओं/कृषिरत महिलाओं ने भाग लिया); तथा iv) दिनांक 16 से 25 फरवरी, 2016 को कृषि अभियांत्रिकी संभाग में "मोटर वाइन्डिंग" (गुडगांव जिले के 9 ग्रामीण युवाओं ने भाग लिया)।



कृषि विज्ञान केन्द्र, शिकोहपुर में 'डेरी पालन' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, कलिम्पोंग द्वारा "दार्जिलिंग मैन्डेरिन तथा बड़ी इलायची की टिकाऊ प्रौद्योगिकियां" विषय पर दिनांक 15 जनवरी तथा 31 जनवरी, 2016 को किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में दार्जिलिंग जिले के विभिन्न स्थानों से आए कुल चालीस किसानों ने भाग लिया।

❖ संस्थान के पादप रोगविज्ञान संभाग द्वारा सीएएफटी के अंतर्गत "पादप रोगजनकों के पादप रोगजनकता जीनों का कार्यपरक विश्लेषण" विषय पर दिनांक 2 से 22 जनवरी, 2016 के दौरान एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न राज्यों के कुल सोलह प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।

❖ भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, इन्दौर ने दिनांक 22-23

फरवरी, 2016 को "डुरुम गेहूं उत्पादन, विपणन और खपत" पर गेहूं विकास निदेशालय, गाजियाबाद द्वारा प्रायोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, राज्य विभागों, बीज उत्पादकों और उद्योगों जैसे विभिन्न संगठनों से बीज प्रतिभागियों ने भाग लिया।

❖ कृषि भौतिकी संभाग ने कृषि प्रौद्योगिकी आकलन एवं हस्तांतरण केन्द्र (कटेट) के सहयोग से दिनांक 24 फरवरी से 2 मार्च, 2016 को "टिकाऊ प्राकृतिक संसाधन प्रबंध के लिए भागीदारी जीआईएस" विषय पर एक मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाया। इस पाठ्यक्रम में कृषि, बागवानी, सिविल इंजीनियरिंग, पशु पालन, पर्यावरण विज्ञान तथा सूचना प्रौद्योगिकी विषयों से जुड़े राज्य सरकार और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों के कुल बीस प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।

राष्ट्रीय कार्यशाला

संस्थान की कृषि ज्ञान प्रबंध इकाई द्वारा "ई-ग्रंथ का सुदृढ़ीकरण एवं संधारणीयता" विषय पर दिनांक 26-27 फरवरी, 2016 को एनएएससी परिसर, नई दिल्ली - 110 012 में दो दिवसीय राष्ट्रीय

कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ. एन.के. कृष्ण कुमार, उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), भाकृअनुप ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। डॉ. रविन्द्र कौर, निदेशक (कार्यकारी), भा.कृ.अ.सं. ने डिजिटल पहुंच की महत्ता पर बल दिया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. पी.एस. पाण्डेय, सहायक महानिदेशक (ईपी एंड एचएस), भाकृअनुप ने राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) की एकीकृत डिजिटल रिपोर्टिंग तथा वास्तविक पुस्तकालय की जरूरत पर बल दिया। इस कार्यशाला से राज्य कृषि विश्वविद्यालयों तथा भाकृअनुप संस्थानों के लाइब्रेरियन को ई-ग्रंथ में शामिल होने का अवसर मिला। इस कार्यक्रम में विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों तथा भाकृअनुप संस्थानों से कुल 72 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान के सेस्करा सभाभवन में दिनांक 19 तथा 20 फरवरी 2016 को विभिन्न संभागों के राजभाषा नोडल अधिकारियों के लिए 'राजभाषा नीति, नियम, कार्यान्वयन तथा हिन्दी प्रगति रिपोर्ट व निरीक्षण प्रोफार्मा' पर दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 19 फरवरी 2016 को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय नई दिल्ली के पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री राम निवास शुक्ल ने प्रतिभागियों को संस्थान की राजभाषा नीति तथा उसके कार्यान्वयन से संबंधित विषय को बड़े ही सुरुचिपूर्ण ढंग से बताया। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अब तक हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने के सरकार के प्रयासों, आदेशों तथा नियमों का क्रमवार वर्णन किया।

दिनांक 20 फरवरी 2016 को जल संसाधन मंत्रालय के पूर्व निदेशक (राजभाषा) श्री अशोक कुमार सचदेव ने राजभाषा संबंधी कार्यों की समीक्षा करने के लिए निरीक्षण प्रोफार्मा, राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति



'डुरुम गेहूं उत्पादन, विपणन एवं खपत' पर प्रशिक्षण



हिन्दी कार्यशाला में एक प्रतिभागी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए

रिपोर्ट तथा वार्षिक रिपोर्ट भरने में आने वाली कठिनाइयों का समाधान किया तथा बड़े ही सरल ढंग से इन्हें भरने के बारे में बताया। संस्थान के विभिन्न संभागों के हिन्दी नोडल अधिकारी इससे काफी प्रभावित हुए।

कार्यशाला में 30 नोडल अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए। श्री केशव देव, उप निदेशक (राजभाषा) ने सभी का धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त की कि सभी नोडल अधिकारी अपने-अपने संभाग में राजभाषा हिन्दी रिपोर्ट भरने में सक्षम होंगे तथा संभाग में अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने में अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रोत्साहित करेंगे।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

संस्थान के पादप रोगविज्ञान संभाग द्वारा "पादप, रोगजनक एवं आमजन : मानव को लाभ पहुंचाने में पादप रोगविज्ञान के समक्ष चुनौतियों" विषय पर 23 से 27 फरवरी, 2016 को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भारत में छठा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

विविध गतिविधियाँ

बाह्य निधि सहायता प्राप्त परियोजनाएँ स्वीकृत

- ❖ एमआईडीएच द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "लिलियम फार्मोसेनम से

असामयिक पुष्प गुणों के अन्तर्वेशन द्वारा लिलियम में किशोर अवधि का न्यूनीकरण", प्रधान अन्वेषक : डॉ. एम. आर. धीमान, भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केन्द्र, कटराई

- ❖ जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "नदियों व जल-धाराओं में गिरने वाले नगरपालिका और औद्योगिक गन्दे जल के उपचार हेतु एक नवोन्मेषी ग्रीन प्रौद्योगिकी", प्रधान अन्वेषक : डॉ. खजांची लाल, जल प्रौद्योगिकी केन्द्र, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "लघु प्रदीप्ति दिवस उष्णकटिबंधीय प्याज (एलियम सीपा एल.) में द्वि-अगुणित उत्पादन और संकर विकास के लिए उपयोग", प्रधान अन्वेषक : डॉ. अनिल खार, सब्जी विज्ञान संभाग, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "भ्रूण बचाव एवं आणविक मार्करों का उपयोग करके संकर पौद वसूली को बढ़ाने हेतु नींबूवर्गीय फलों का आणविक प्रजनन", प्रधान अन्वेषक : डॉ. अनिल कुमार दुबे, फल एवं औद्योगिक प्रौद्योगिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "कुनिटज ट्रिप्सिन निरोधक मुक्त सोयाबीन जीनप्ररूपों से बेस्वाद को उत्पन्न करने वाले लिपॉक्सीगिनेज -2 जीन का मार्कर सहायतार्थ उन्मूलन", प्रधान अन्वेषक : डॉ. अक्षय तालुकदार, आनुवंशिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "टमाटर (सोलेनम लाइकोपर्सिकम एल.) में बेगोमोवायरस प्रतिरोधिता जीनों का अन्तर्वेशन", प्रधान अन्वेषक : डॉ. आर. के. सरिता, पादप रोगविज्ञान संभाग, भा.कृ.अ.सं.

- ❖ एसईआरबी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "अमरुद मुरझान रोगजनकों का पृथक्करण एवं लक्षणवर्णन तथा जैव-एजेन्टों द्वारा इनका नियंत्रण", प्रधान अन्वेषक : डॉ. ए. नागराजा, फल एवं औद्योगिक प्रौद्योगिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ एसईआरबी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "उष्ण-कटिबंधीय जलवायु के तहत फल उपज एवं गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अंगूर में संरक्षित खेती तकनीक का विकास", प्रधान अन्वेषक : डॉ. एम.के. वर्मा, फल एवं औद्योगिक प्रौद्योगिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ एसईआरबी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "कपास, टमाटर, बैंगन एवं पपीता से संबंधित विभिन्न मीलीबग प्रजातियों के विरुद्ध कीटनाशकों की चयनात्मकता तथा उनके प्रमुख प्राकृतिक शत्रुओं का मूल्यांकन", प्रधान अन्वेषक : डॉ. के. शंकरगणेश, कीटविज्ञान संभाग, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "ई-ग्रंथ पुस्तकालय का सुदृढीकरण (उच्चतर कृषि शिक्षा का सुदृढीकरण एवं विकास)", प्रधान अन्वेषक : डॉ. ए.के. जैन, प्रभारी कृषि ज्ञान प्रबंध इकाई, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "जैविक तथा संरक्षित कृषि प्रणालियों से कृषि पारिस्थितिकी प्रणाली सेवाओं का परिमाणन" प्रधान अन्वेषक : डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, सेस्करा, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "बागवानी फसलों के लिए वायरलेस सेंसर आधारित सिंचाई एवं उर्वरीकरण

- प्रणालियाँ”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. नीलम पटेल, जल प्रौद्योगिकी केन्द्र, भा.कृ.अ.सं.
- ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “संरक्षण जुताई रीतियों के तहत मृदा में संशोधित रोमकूप आकार वितरण की प्रतिक्रिया में गेहूं में जड़ व्यवहार”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. देबाशीष चक्रवर्ती, कृषि भौतिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “चावल में नाइट्रोजन अधिग्रहण प्रभावशीलता को बढ़ाने में मृदा माइक्रोबियोम मॉड्युलेशन रणनीतियाँ”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. बी. रामाकृष्णन, सूक्ष्म जीवविज्ञान संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “नमी दबाव वाले क्षेत्रों में जल उत्पादकता को सुधारना – उन्नत हाइड्रोजेल पर आधारित राइजोस्फेयर केन्द्रित समेकित युक्तियाँ” प्रधान अन्वेषक : डॉ. अनुपमा, कृषि रसायन संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “भारत में कृषि शिक्षा में कौशल अन्तराल पर एक अध्ययन – उद्योग एवं किसानों की जरूरतें”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. ज्योति रंजन मिश्रा, कृषि प्रसार संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “उद्यमशीलता मानव संसाधनों का विकास करने हेतु अनुभवजन्य लर्निंग तथा एंज़ाइमॉजिकल विधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. रश्मि सिंह, कृषि प्रसार संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “अंतः पादपी जीवाणुओं का अनुप्रयोग करके मूंगफली, सोयाबीन, चना तथा अरहर में नमी अल्पता दबाव को कम करना”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. के. स्वर्ण लक्ष्मी, सूक्ष्मजीवविज्ञान संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “स्कलेरोटिनिया रॉट के प्रबंधन पर विशेष बल देते हुए स्कलेरोटिनिया स्कलेरोटियोरम पर अध्ययन”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. लक्ष्मण प्रसाद, पादप रोगविज्ञान संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “जीनोमिक्स, माल्युकूलर एवं शरीरक्रिया विज्ञान सूचना एवं संसाधनों का उपयोग करके उच्च उपज वाली ताप सहिष्णु गेहूं किस्मों का विकास”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. जी.पी. सिंह, आनुवंशिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “दबाव के तहत उपज संवृद्धि के लिए वसंत ग शीत गेहूं संकरण”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. एस.वी. साई प्रसाद, अध्यक्ष, भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केन्द्र, इन्दौर
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “फलों को पकाने के लिए इथीलिन पाउडर का विकास”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. अभिजीत कार, फल विज्ञान एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “क्लाउड नेटवर्कड ड्रोन (UAV) सहायताथ स्प्रेयर का विकास”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. जे.पी. सिन्हा, कृषि अभियांत्रिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “रोबोटिक प्रेसीशन प्लांटर का विकास”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. एच.एल. कुशवाहा, कृषि अभियांत्रिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “तुलसी, लेमनग्रास तथा धनिया से सुगन्धित तेल के अधिक निष्कर्षण हेतु स्पंदन इलैक्ट्रिक फील्ड, ओहमिक हीटिंग तथा अल्ट्रासाउंड फाइल पूर्वःउपचार प्रणालियों की डिजाइन एवं विकास”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. संगीता चोपड़ा, कृषि अभियांत्रिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “लघु फार्म यांत्रिकीकरण के लिए इन्टेग्रल पॉवर उपकरण की डिजाइन एवं विकास”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. इन्द्र मणि, अध्यक्ष, कृषि अभियांत्रिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “हाईटेक कृषि को अपनाकर फार्म आमदनी में वृद्धि करना”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. प्रमोद कुमार, कृषि अर्थशास्त्र संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “किसानों के जोखिम समायोजन और उद्यमशीलता व्यवहार से जुड़े सामाजिक-दार्शनिक कन्स्ट्रक्ट्स को मापने हेतु पैमानों का मानकीकरण एवं प्रमाणन”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. आर.एन. पड़ारिया, कृषि प्रसार संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “संरक्षण जुताई रीतियों के तहत मृदा में संशोधित रोमकूप आकार वितरण की प्रतिक्रिया में गेहूं में जड़ व्यवहार”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. देबाशीष चक्रवर्ती, कृषि भौतिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त “भारत के गंगा के मैदानों में एनएआरएस प्रौद्योगिकियों के अंगीकरण के निर्धारक तथा सामाजिक-आर्थिक प्रभाव”, प्रधान अन्वेषक : डॉ. आर.

- आर. बर्मन, कृषि प्रसार संभाग, भा.कृ. अ.सं.
- ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "कृषि (KRISHI) के रूप में 12वीं योजना ईएफसी का डाटा प्रबंधन संघटक", प्रधान अन्वेषक : डॉ. विनय सहगल, कृषि प्रसार संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "गेहूं में तिगुनी रतुआ प्रतिरोधिता पर इंडो-आस्ट्रेलियन कार्यक्रम", प्रधान अन्वेषक : डॉ. शिवसामी, अध्यक्ष, भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केन्द्र, वेलिंग्टन
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "पारम्परिक एवं जैव-प्रौद्योगिकीय युक्तियों का एकीकरण करके आनुवंशिक आधार के विस्तार हेतु पूर्व-प्रजनन", प्रधान अन्वेषक : डॉ. शिवसामी, अध्यक्ष, भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केन्द्र, वेलिंग्टन
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "भारत की प्रमुख पुष्पविज्ञान फसलों को प्रभावित करने वाले फाइटोप्लाज्मा का लक्षणवर्णन एवं प्राकृतिक विस्तार स्रोत", प्रधान अन्वेषक : डॉ. जी.पी. राव, पादप रोगविज्ञान संभाग, भा.कृ. अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "प्रमुख बागवानी फसलों को संक्रमित करने वाले फाइटोप्लाज्मा का लक्षणवर्णन एवं महामारीविज्ञान", प्रधान अन्वेषक : डॉ. जी.पी. राव, पादप रोगविज्ञान संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "कृषि उद्यमशीलता के लिए ग्रामीण युवाओं का क्षमता निर्माण", प्रधान अन्वेषक : डॉ. अंजनी कुमार, प्रभारी, कृषि विज्ञान केन्द्र, शिकोहपुर, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "संरक्षित संरचनाओं के तहत करेले की खेती के लिए कृषि तकनीकों का मानकीकरण", प्रधान अन्वेषक : डॉ. टी.के. बेहेरा, सब्जी विज्ञान संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "फसल-कार्यपरक जीनोमिक्स आम संघटक में पराजीनियों पर नेटवर्क परियोजना", प्रधान अन्वेषक : डॉ. एस.के. सिंह, फल एवं औद्योगिक प्रौद्योगिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "आम (मैग्नीफेरा इंडिका व्यावसायिक किस्म आम्रपाली) का उच्च सघनता सम्पर्क मानचित्र एवं जीनोम अनुक्रमण", प्रधान अन्वेषक : डॉ. मनीष श्रीवास्तव, फल एवं औद्योगिक प्रौद्योगिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की 12वीं योजना स्कीम राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी निधि (NAIF) के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त "जैडटीएम एंड बीपीडी इकाई में कृषि व्यवसाय इनक्यूबेशन (ABI) केन्द्र की स्थापना", प्रधान अन्वेषक : डॉ. नीरू भूषण, प्रभारी, जैडटीएम एंड बीपीडी इकाई, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ 12वीं पंचवर्षीय योजना 2012-17 के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त जल पर सीआरपी के अंतर्गत "फसलों तथा जलजीव पालन क्षेत्रों में अपशिष्ट जल के उपयोग की रणनीतियाँ", अग्रणी केन्द्र : भारतीय जल प्रबंधन संस्थान, भुवनेश्वर, प्रधान अन्वेषक : डॉ. रविन्द्र कौर, परियोजना निदेशक, जल प्रौद्योगिकी केन्द्र, भा.कृ.अ.सं.
 - ❖ मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, ग्लोबल सेन्टर फॉर फूड सिस्टम्स इनोवेशन (GCFSI) द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त "किसानों को सशक्त बनाने में कम कार्बन फुटप्रिन्ट वाली शीत भंडारण संरचनाएं : भंडारण में सुधार लाना और पेरिशेबल उत्पादों के प्रसंस्करण में समर्थ बनाना", प्रधान अन्वेषक : डॉ. संगीता चोपड़ा, कृषि अभियांत्रिकी संभाग, भा.कृ.अ.सं.

वाणिज्यिक प्रौद्योगिकियां

भा.कृ.अ.सं. की तीन प्रौद्योगिकियों यथा पूसा एसटीएफआर मीटर, पूसा सोया नट एवं वीएएम बायो-फर्टिलाइजर प्रौद्योगिकियों का लाइसेंस चार उद्योग भागीदारों को प्रदान किया गया और इस तिमाही में ₹ 6,50,000 का राजस्व सृजित किया गया।

कार्पोरेट सदस्यता

इस तिमाही में, 11 नए सदस्यों को पंजीकृत किया गया और 8 कार्पोरेट सदस्यता की समीक्षा की गई तथा ₹ 95,000 का राजस्व सृजित किया गया।

सम्मान / पुरस्कार

- ❖ डॉ. प्रीतम कालिया, अध्यक्ष, सब्जी विज्ञान संभाग ने आईआईवीआर, वाराणसी में 'मृदा एवं मानव स्वास्थ्य के लिए शाकीय फलियां' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में वर्ष 2015 के लिए इंडियन सोसायटी ऑफ वेजिटेबल्स साइन्स का डॉ. बिस्वजीत चौधरी स्मारक पुरस्कार प्राप्त किया।
- ❖ डॉ. (श्रीमती) सुषमा सुधिश्री, प्रधान वैज्ञानिक, जल प्रौद्योगिकी केन्द्र, भा.कृ.अ.सं. ने जलसंभर आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंध, जल प्रबंध एवं आईएएसडब्ल्यूसी की समृद्धि में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए इंडियन एसोसिएशन ऑफ सॉयल एंड वॉटर कन्जरवेशनिस्ट्स से स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

- ❖ डॉ. लक्ष्मण प्रसाद, वरिष्ठ वैज्ञानिक को वनस्पतिविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में "पादप विज्ञान अनुसंधान : पर्यावरणीय एवं कृषि क्रान्ति के लिए 21वीं सदी से परे अवलोकन" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान फेलो ऑफ सोसायटी फॉर प्लांट रिसर्च-2015 पुरस्कार प्रदान किया गया।
- ❖ संस्थान की आंचलिक प्रौद्योगिकी प्रबंध व व्यवसाय नियोजन एवं विकास (जैडटीएम एंड बीपीडी) इकाई ने प्रयोगशाला से खेत तक अन्वेषणों के सफल व्यावसायीकरण के लिए दिनांक 11 मार्च, 2016 को रुरल मार्केटिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया (RMAI) का गोल्ड इन प्लेम अवार्ड्स एशिया-2016 प्राप्त किया।

डॉ. रविन्द्र कौर ने निदेशक का कार्यभार ग्रहण किया

डॉ. त्रिलोचन महापात्र की नियुक्ति दिनांक 19 फरवरी, 2016 को सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पद पर की गई। डॉ. महापात्र ने डॉ. रविन्द्र कौर, परियोजना निदेशक, जल प्रौद्योगिकी केन्द्र को संस्थान के निदेशक का कार्यभार सौंपकर दिनांक 22 फरवरी, 2016 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय में अपना नया पदभार ग्रहण किया।



डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप से संस्थान के निदेशक (कार्यवाहक) का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण करती हुई डॉ. रविन्द्र कौर, परियोजना निदेशक, जल प्रौद्योगिकी केन्द्र

विदेशी अतिथि

जनवरी-मार्च, 2016 की अवधि के दौरान तीन प्रतिनिधि मंडलों – नेपाल, जापान व अफगानिस्तान प्रत्येक से एक-एक प्रतिनिधि मंडल ने संस्थान का दौरा किया। जापानी प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व श्री तोशियाकी सातो, अध्यक्ष, जापान पल्स फाउण्डेशन; तथा अफगानी प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व महामहिम कृषि उप मंत्री, अफगानिस्तान ने किया। आर्मेनिया के महामहिम कृषि मंत्री श्री सर्जो कैरापेन्टियान तथा प्रो. सैम्यूल वॉल्फ, डीन, हिब्रू विश्वविद्यालय, यरुशलम, इस्रायल ने भी संस्थान का दौरा किया।



भा.कृ.अ.सं. की टीम के साथ आपसी विचार-विमर्श करता हुआ जापानी प्रतिनिधि मंडल

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली-110012 की ओर से, प्रकाशन यूनिट द्वारा त्रैमासिक प्रकाशित तथा वीनस प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, बी-62/8, नारायणा इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-II, नई दिल्ली - 110 028 द्वारा मुद्रित।

संयुक्त निदेशक (अनुसंधान): डॉ. के.वि. प्रभु, सम्पादक एवं उप निदेशक (राजभाषा) : केशव देव

वेबसाइट: <http://www.iari.res.in>